OUKA
The University of Osaka
Institutional Knowledge Archive

| | |
|---|---|
| Title | जापानी विद्यार्थियों को हिंदी-अध्यापन के अनुभव |
| Author(s) | Singh, Ved Prakash |
| Citation | 外国語教育のフロンティア. 2018, 1, p. 233-235 |
| Version Type | VoR |
| URL | https://doi.org/10.18910/69792 |
| rights | |
| Note | |

*The University of Osaka Institutional Knowledge Archive : OUKA*

https://ir.library.osaka-u.ac.jp/

The University of Osaka

# जापानी विद्यार्थियों को हिंदी–अध्यापन के अनुभव

## 日本人学生へのヒンディー語教育の経験から

SINGH, Ved Prakash

**要約**

私は日本に来て初めてヒンディー語を母語としない外国人にヒンディー語を教えるという貴重な経験をしている。まだその経験の途中にあることから、確定的なことは言えないが、私自身がこの経験から多くのことを学びつつあり、また私の経験を読む読者がそこから何か得るところがあれば私のこの文章にも何らかの意味があることを期待している。具体的なことで言えば、ヒンディー語の子音と母音の正確な発音の習得が日本人には容易でないことを改めて知った。その点はしかし学生たちの努力によってかなりの程度克服することができたことも事実である。しかし、それ以上に授業で学ぶことを難しくしているのは、言語の背景にあるインドと日本の文化的な違いである。例えば日本人学生にとって犬はとてもかわいい動物であるが、インドでは必ずしもそうではない。そのことがインド人が犬を描くことで表現していることを正確に理解することを難しくしている。教室の外でヒンディー語を話したり聞いたりする環境にないことも学生にとっての学習につきまとうもう一つの大きな問題である。日本人学生が本をあまり読んでいるように見えないことにも懸念を覚えている。ヒンディー語の映画を観ることも有益であるし、インターネットを活用してヒンディー語の実際に触れることも効果が大きいと考える。しかし、これまでの私の経験から、なんと言ってもヒンディー語の学習にとって一つ非常に効果があると思えるのは、語劇への参加である。何とか多くの学生が、できれば全員が何らかの形で語劇を通じて、生きた会話の練習をすることができれば良いと願っている。

キーワード：ヒンディー語、外国語教育、語劇

मेरे लिए इस विषय पर बात करना जितना जरूरी है, उतना ही मुश्किल भी है। जरूरी इसलिए है कि इस विषय पर बात करने से संभवतः जो कुछ नया अनुभव मुझे हुआ है वह सब जान पाएँगे। मुश्किल इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि अभी मैं अनुभव की शुरुआत में ही हूँ, तो उसे कैसे लिखूँ? यानी पूरा अनुभव होना अभी बाकी है। या जितना अनुभव किया है, वह अभी बहुत कम है।

खैर जितना जान पाया हूँ उसे आपसे साझा करता हूँ। मैंने अभी तक हिंदी उन्हीं विद्यार्थियों को पढ़ाई थी, जिनकी मातृभाषा हिंदी या इसकी कोई बोली है। लेकिन जापान में पहली बार अहिंदी भाषियों को हिंदी पढ़ाने का अनुभव हुआ।

जो हिंदी नहीं जानते हैं और हिंदी पढ़ते हैं, ऐसे विद्यार्थी भारतीय विश्वविद्यालयों में भी मिले हैं। लेकिन उनकी स्थिति और जापानी विद्यार्थियों की स्थिति में संस्कृति का भी अंतर है। पहली परेशानी स्वर और व्यंजनों के उच्चारण की होती है। उच्चारण की समस्या धीरे–धीरे ही सुलझती है। अभ्यास से कुछेक ध्वनियों को छोड़ अधिकांश का अच्छा उच्चारण विद्यार्थी सीख रहे हैं। लेकिन प्रकृति और संस्कृति की भिन्नता के कारण भाषा और साहित्य अध्यापन में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। भारतीय प्रकृति में धूप और बारिश का जो अर्थ और महत्त्व होता है वह जापानी प्रकृति में संभवतः नहीं होता है।

मैंने एक कक्षा में त्रिलोचन की कविता 'धूप सुंदर' का अर्थ समझाने की कोशिश की। वहाँ बैठे अधिकांश विद्यार्थियों को धूप पसंद नहीं थी। वे 'धूप सुंदर, धूप में जग रूप सुंदर' का वह अर्थ बड़ी मुश्किल से समझ पाए जो त्रिलोचन महसूस कर रहे और लिख रहे थे। जो मैं भी महसूस करता हूँ। इसी तरह नागार्जुन की एक कविता 'अकाल और उसके बाद' में चूल्हे और चक्की के पास कानी कुतिया के सोने का चित्रण है। जापानी संस्कृति में कुत्ते को हेय नहीं समझा जाता है। जबकि भारतीय समाज और भाषा में कुत्ता कभी कभी हेय ही नहीं गाली के रूप में भी प्रयुक्त किया जाने वाला जीव और शब्द है। इस संदर्भ को भी समझाने में काफी मुश्किल आई।

जापानी विद्यार्थी स्वभाव से जितने मेहनती होते हैं उतने ही अंतर्मुखी भी होते हैं। वे प्रश्नों को पूछने में भी कई बार कम रुचि लेते हैं। इससे भी परेशानी पैदा होती है। ऐसे में सबसे अच्छा तरीका हर कक्षा में बारी–बारी से पढ़ाए हुए के बारे में सबसे पूछना चाहिए। अनेक बार पूछने पर वे झिझक छोड़ देते हैं।

साथ ही एक समस्या यह भी देखने में आती है कि कक्षा के अतिरिक्त वे हिंदी भाषा का अध्ययन या उसमें बातचीत नही ंके बराबर ही करते हैं। इससे भी उनके भाषा अध्ययन में कठिनाई पैदा होती है और वे काफी समय में ही हिंदी बोलना और समझकर लिखना सीख पाते हैं। 'ड़', 'र' और 'ल' व्यंजन ध्वनियों की भिन्नता और विद्यार्थियों की कठिनाई धीरे–धीरे ही दूर होगी। यदि मैं उन्हें 'कपड़ा', 'नरम' आदि शब्द लिखने के लिए कहता हूं तो कुछेक विद्यार्थी 'कपड़ा' न लिखकर 'कपरा' या 'नरम' के स्थान पर 'नलम' शब्द लिख देते हैं। इसका कारण यह है कि जापानी भाषा में र, रि, रु, रे, रो ध्वनियां तो हैं लेकिन 'ल' और 'ड़' व्यंजन ध्वनियाँ नहीं हैं। इसके लिए इन ध्वनियों से बनने वाले शब्दों का उच्चारण अनेक बार धीमी गति से करने पर विद्यार्थियों को लाभ होता है।

जब मैंने विदेशी विद्यार्थियों को अध्यापन का कार्य आरंभ किया तो आदतन जल्दी–जल्दी बोलकर ही अपनी बात समझाने की कोशिश करता था। विदेशी भाषा सीख रहे विद्यार्थियों को सभी शब्द और उनके अर्थ समझने में थोड़ा समय लगता है इसलिए अब उन्हें एक–एक शब्द धीरे–धीरे बोलकर ही समझाना आरंभ किया है। इससे वे मेरी बात पहले की अपेक्षा अधिक आसानी से समझ पाते हैं।

अनुवाद और कहानी–पढ़न के माध्यम से भी विद्यार्थी हिंदी भाषा सीखते हैं। जापानी अथवा अंग्रेजी कहानी का हिंदी में अनुवाद करने से ही विद्यार्थी हिंदी भाषा सीखने का प्रयास करते हैं। इस संदर्भ में सबसे अधिक परेशानी दो–तीन स्थलों पर देखने को मिली है। जापानी लोक कहानियों में पशु, पक्षी, जीव–जंतु, सजीव–निर्जीव वस्तुएँ और मनुष्य सभी पात्रों के रूप में आते हैं। ऐसी कहानियों में लोमड़ी, केकड़ा आदि प्रायः क्रमशः नर, मादा रूप में आते हैं। हिंदी में लोमड़ी स्त्रीलिंग

और केकड़ा पुल्लिंग शब्द हैं। ऐसे स्थलों पर भी विद्यार्थी अटकते हैं। लेकिन फिर उनका लिंग परिवर्तन कर कहानी में कुछ बदलाव कर लिया जाता है। कई बार ऐसे फलों का भी प्रसंग आता है जिनका नाम हिंदी में उपलब्ध नहीं है। इस स्थिति में उनकी भांति हिंदी नाम वाले फलों का भी प्रयोग कर लिया जाता है।

कक्षा के बाहर वार्तालाप से भी सभी विद्यार्थी ज्यादा से ज्यादा भाषा सुन और बोल सकते हैं। जो विद्यार्थी कक्षा के बाद भी शिक्षक या हिंदी बोलने वाले अन्य विद्यार्थियों या व्यक्तियों से हिंदी में बातचीत की कोशिश करते हैं, उन्हें भाषा ज्यादा समझ आने लगती है। विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा सीख रहे विद्यार्थियों को अनुकूल वातावरण नहीं मिल पाता है। वे जिस भाषा को सीखते हैं उसे बोलने वाले बहुत ही कम लोग उन्हें वहाँ मिलते हैं। भाषा को सीखने का भरपूर वातावरण ा न मिल पाना एक अपरिहार्य सीमा है। अधिकांश विद्यार्थियों को हिंदी–भाषी नहीं मिल पाता है। अगर उन्हें कक्षा के बाद भी हिंदी में धीरे–धीरे बोलकर–समझाकर बात करने वाले मित्र, परिचित मिलें तो वे जल्दी और ज्यादा आसानी से हिंदी सीख सकते हैं। लेकिन इसकी भरपाई के बहुत सारे साधन संचार क्रांति ने उपलब्ध करवा दिए हैं।

इन साधनों में हिंदी फिल्मों का अविस्मरणीय योगदान है। हिंदी फिल्मों और संगीत ने हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में बड़ा योगदान दिया है। हिंदी फिल्में भाषा सिखाने के साथ हिंदी भाषी समाज की संस्कृति (कुछ हद तक भारतीय संस्कृति) से भी परिचित कराती हैं। विद्यार्थियों का मनोरंजन भी करती हैं। हिंदी समाचारों, गानों को नियमित रूप से सुनने से भी नए शब्दों से विद्यार्थी परिचित होते हैं। इंटरनेट ने विद्यार्थियों को पुस्तकालय के अलावा हिंदी का एक बड़ा समृद्ध भंडार प्रदान किया है। लेकिन देखा जाता है कि विद्यार्थियों में पढ़ने की ललक अपेक्षाकृत कम है। वे कहानियां, उपन्यास बहुत कम पढ़ते हैं। पुस्तकालय जाकर हिंदी की पुस्तक लेकर पढ़ने के प्रति आरंभ से ही उनमें रुचि जगानी चाहिए। इससे वे भाषा के बहुत बड़े संसार से परिचित हो सकते हैं।

भाषा सीखने का एक तरीका मुझे एक विद्यार्थी ने ही सुझाया। बाजार में और बाहर दिखने वाली चीजों को देखकर उनके हिंदी नामों को जानने की जिज्ञासा प्रथम वर्ष के एक विद्यार्थी ने व्यक्त की थी। इस तरीके से भी भाषा का ज्ञान विद्यार्थियों को दिया जा सकता है। किसी कार्य, वस्तु या दृश्य को हिंदी में क्या कहा जाता है, इसे बार–बार सुन–बोल कर भी भाषा का ज्ञान किया और करवाया जा सकता है। विद्यार्थियों के साथ शैक्षिक यात्राएँ भी उनको भाषा सिखाने में लाभप्रद हो सकती हैं। इसमें आवश्यकता है उनमें जिज्ञासा बढ़ाने की। साथ–ही–साथ वे अपनी अंतर्मुखी प्रवृत्ति को छोड़कर संवादध ार्मी बनें। इसमें उनके मित्र और परिजन अधिक सकारात्मक कदम उठाकर उन्हें बहिर्मुखी बना सकते हैं।

घुलने–मिलने और संवाद को अधिकाधिक प्रयोग में लाने का एक और तरीका है। प्रत्येक वर्ष कुछ विद्यार्थी हिंदी में एक नाटक खेलते हैं। इसमें प्रत्येक विद्यार्थी की भागीदारिता सुनिश्चित कर उन्हें हिंदी संवाद और कक्षा से इतर बातचीत का माहौल प्रदान कर भाषा को सिखाया जा सकता है। प्रत्येक वर्ष के प्रत्येक विद्यार्थी को नाटक में हिस्सेदारी की ओर उन्मुख किया जाना चाहिए। नाटक के छोटे–छोटे मंचन, नुक्कड़ नाटक के मंचन हिंदी सीखने वाले विद्यार्थियों से करवा कर भी उन्हें हिंदी सिखाई जा सकती है। इसमें उन्हें संवाद बोलने, भाषा सीखने और बोलने का लहजा भी सीखने में मदद मिलती है। ऐसा प्रावधान यदि सभी विद्यार्थियों के लिए हो, जिसमें समय अधिक न लगे और इसे हर कक्षा के अध्यापक बारी–बारी से सभी विद्यार्थियों से करवाएँ तो वे हिंदी के संवाद याद करने के बाद उनका व्यवहार भी सीख सकेंगे।